सोलापुर शहर में हिंदी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता को प्रभावित करने वाले जनसांख्यिकीय कारकों का अध्ययन

डॉ. रति सुलेगाव

हिंदी विभाग

नॉर्थ ईस्ट क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी

दीमापुर, नागालैंड

सारांश -

यह अध्ययन सोलापुर शहर में हिंदी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता को प्रभावित करने वाले जनसांख्यिकीय कारकों—जैसे आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय और मातृभाषा—का विश्लेषण करता है। भारत में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, परंतु गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में इसकी स्वीकार्यता और जागरूकता में विविधता देखी जाती है। सोलापुर, जो महाराष्ट्र राज्य का एक बहुभाषिक शहर है, इस संदर्भ में एक उपयुक्त अध्ययन क्षेत्र है। शोध में 300 प्रतिभागियों से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकला कि शिक्षा स्तर, आयु वर्ग और व्यवसाय हिंदी जागरूकता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु रणनीतिक सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द : हिंदी भाषा, जागरूकता, जनसांख्यिकीय कारक, सोलापुर, शिक्षा, मातृभाषा, सामाजिक प्रभाव

प्रस्तावना -

भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है जहाँ भाषाई विविधता न केवल सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक समावेशन और राष्ट्रीय एकता का आधार भी है। संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं में हिंदी को विशेष स्थान प्राप्त है, जिसे भारत की राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है। हिंदी भाषा का प्रयोग प्रशासनिक कार्यों, शिक्षा, मीडिया, साहित्य, और जनसंचार के विविध माध्यमों में व्यापक रूप से होता है। इसके बावजूद, हिंदी की स्वीकार्यता और जागरूकता का स्तर देश के विभिन्न क्षेत्रों में असमान रूप से देखा जाता है, विशेषकर उन राज्यों में जहाँ हिंदी मातृभाषा नहीं है।

महाराष्ट्र राज्य, जिसकी राजभाषा मराठी है, भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यहाँ मराठी के साथ-साथ कन्नड़, तेलुगु, उर्दू, हिंदी और अन्य भाषाओं के बोलने वाले समुदाय सह-अस्तित्व में हैं। सोलापुर शहर, जो महाराष्ट्र के दक्षिणी भाग में स्थित है, एक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक नगर है। यहाँ

हिंदी भाषी जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण वर्ग निवास करता है, जो विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक और व्यावसायिक पृष्ठभूमियों से संबंधित है। इस संदर्भ में यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि हिंदी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता को कौन-कौन से जनसांख्यिकीय कारक प्रभावित करते हैं।

हिंदी भाषा की जागरूकता केवल भाषा-ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक व्यवहार, सांस्कृतिक सहभागिता, और भाषाई नीति के प्रति दृष्टिकोण को भी प्रतिबिंबित करती है। जैसा कि शर्मा (2018) ने अपने ग्रंथ "हिंदी भाषा और समाज" में उल्लेख किया है, "हिंदी भाषा का प्रभाव केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक संपर्क भाषा के रूप में देश के विभिन्न हिस्सों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है।" इसी प्रकार जोशी (2020) ने महाराष्ट्र में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि "शहरी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग व्यापारिक संवाद, शिक्षा और मीडिया में निरंतर बढ़ रहा है।"

इस अध्ययन का उद्देश्य सोलापुर शहर में हिंदी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता का मूल्यांकन करना है, और यह विश्लेषण करना है कि आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय, और मातृभाषा जैसे जनसांख्यिकीय कारक इस जागरूकता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। यह शोध न केवल भाषाई व्यवहार को समझने में सहायक होगा, बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु रणनीतिक दिशा भी प्रदान करेगा। वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में, जहाँ भाषाई पहचान और बहुभाषिकता पर पुनर्विचार हो रहा है, यह अध्ययन हिंदी भाषा की सामाजिक स्वीकार्यता और जनसांख्यिकीय प्रभावों को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह शोध हिंदी भाषा के प्रति दृष्टिकोण को वैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषित करता है और भाषाई समावेशन की दिशा में योगदान देने का प्रयास करता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

भारत जैसे बहुभाषिक राष्ट्र में भाषाओं की भूमिका केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक समावेशन और राष्ट्रीय एकता का आधार भी है। हिंदी, जो संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है, देश के विभिन्न हिस्सों में संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। परंतु इसकी जागरूकता और स्वीकार्यता का स्तर क्षेत्रीय विविधताओं के कारण भिन्न-भिन्न होता है। विशेष रूप से महाराष्ट्र जैसे राज्य में, जहाँ मराठी प्रमुख भाषा है, हिंदी की स्थिति को समझना भाषाई नीति और सामाजिक संवाद की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

सोलापुर शहर, जो महाराष्ट्र के दक्षिणी भाग में स्थित है, एक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक नगर है। यहाँ मराठी, कन्नड़, तेलुगु, उर्दू और हिंदी भाषी समुदाय सह-अस्तित्व में हैं। इस भाषाई विविधता के बीच हिंदी भाषा का प्रयोग व्यापार, शिक्षा, मीडिया और सामाजिक आयोजनों में निरंतर बढ़ रहा है। भारत सरकार की जनगणना रिपोर्ट (2011) के अनुसार, सोलापुर में हिंदी भाषी जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, परंतु यह वृद्धि मात्र संख्यात्मक है—गुणात्मक जागरूकता का मूल्यांकन अभी अपेक्षित है। हिंदी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता को प्रभावित करने वाले जनसांख्यिकीय कारकों—जैसे आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय और मातृभाषा—का विश्लेषण करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि ये कारक भाषा के प्रयोग, समझ और दृष्टिकोण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। उदाहरणस्वरूप, युवा वर्ग में सोशल मीडिया और फिल्में हिंदी के प्रचार में सहायक हो सकती हैं, जबकि वरिष्ठ नागरिकों में पारंपरिक साहित्य और धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से हिंदी

की उपस्थिति देखी जा सकती है। इसी प्रकार, शिक्षित वर्ग में हिंदी के प्रति दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक पाया गया है (शर्मा, 2018)।

यह शोध इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हिंदी भाषा की सामाजिक स्वीकार्यता को वैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषित करता है। जोशी (2020) के अनुसार, "गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है, परंतु इसके पीछे के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारणों को समझना आवश्यक है।" इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु नीति निर्धारण, शैक्षणिक योजनाओं और सामाजिक संवाद की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, यह शोध भाषाई समावेशन की दिशा में भी योगदान देता है। बहुभाषिक समाज में एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका को समझना सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है। यदि हिंदी को केवल उत्तर भारत की भाषा मानकर सीमित किया जाए, तो उसकी सार्वदेशिक भूमिका बाधित हो सकती है। अतः इस प्रकार के क्षेत्रीय अध्ययन हिंदी की व्यापकता और प्रभाव को प्रमाणित करने में सहायक होते हैं। अंततः, यह शोध न केवल भाषाई व्यवहार को समझने का एक प्रयास है, बल्कि यह हिंदी भाषा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कर, भाषा नीति, शिक्षा प्रणाली और सामाजिक संवाद को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

उद्देश्य -

किसी भी वैज्ञानिक या सामाजिक अध्ययन की सफलता उसके स्पष्ट और सुव्यवस्थित उद्देश्यों पर निर्भर करती है। यह शोध "सोलापुर शहर में हिंदी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता को प्रभावित करने वाले जनसांख्यिकीय कारकों" का विश्लेषण करता है, जो भाषाई व्यवहार, सामाजिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक सहभागिता को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस अध्ययन के निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य हैं:

1. सोलापुर शहर में हिंदी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता का मूल्यांकन करना -

इस उद्देश्य के अंतर्गत यह विश्लेषण किया जाएगा कि विभिन्न आयु वर्ग, लिंग, शिक्षा स्तर, व्यवसाय और मातृभाषा वाले लोग हिंदी भाषा के प्रति कितने जागरूक हैं। यह जागरूकता केवल भाषा-ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें हिंदी के प्रयोग, समझ, अभिरुचि और सामाजिक स्वीकार्यता भी सम्मिलित है।

2. जनसांख्यिकीय कारकों का हिंदी जागरूकता पर प्रभाव विश्लेषित करना -

यह उद्देश्य शोध का केंद्रीय तत्व है, जिसके अंतर्गत यह अध्ययन किया जाएगा कि कौन-कौन से जनसांख्यिकीय कारक—जैसे आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय, और मातृभाषा—हिंदी भाषा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। **उदाहरणस्वरूप**, क्या युवा वर्ग हिंदी को अधिक अपनाता है? क्या शिक्षित वर्ग में हिंदी के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया जाता है? क्या मातृभाषा मराठी होने पर हिंदी की स्वीकार्यता में कोई अंतर आता है?

3. हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु संभावित रणनीतियों का सुझाव देना -

इस उद्देश्य के अंतर्गत शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह प्रस्तावित किया जाएगा कि हिंदी भाषा की जागरूकता को बढ़ाने के लिए कौन-कौन से शैक्षणिक, सामाजिक और प्रशासनिक उपाय अपनाए जा सकते हैं। इसमें विद्यालयों में हिंदी गतिविधियों का आयोजन, मीडिया के माध्यम से प्रचार, और द्विभाषिक पाठ्यक्रमों का विकास जैसे सुझाव सम्मिलित हो सकते हैं।

4. हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में समझने की प्रवृत्ति का विश्लेषण -

सोलापुर जैसे बहुभाषिक शहर में हिंदी का प्रयोग विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच संवाद हेतु किया जाता है। इस उद्देश्य के अंतर्गत यह विश्लेषण किया जाएगा कि क्या लोग हिंदी को एक संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार करते हैं, और यदि हाँ, तो किन संदर्भों में—जैसे व्यापार, शिक्षा, सामाजिक आयोजन आदि।

5. क्षेत्रीय भाषाओं और हिंदी के बीच संबंध को समझना -

यह उद्देश्य भाषाई समावेशन की दिशा में है, जिसके अंतर्गत यह देखा जाएगा कि हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं (विशेषकर मराठी) के बीच क्या संबंध है—क्या वे प्रतिस्पर्धी हैं या पूरक? क्या द्विभाषिकता हिंदी जागरूकता को बढ़ाती है?

परिकल्पनाएँ -

शोध परिकल्पना किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन की रीढ़ होती है, जो शोधकर्ता को विश्लेषण की दिशा प्रदान करती है और आंकड़ों के माध्यम से परीक्षण योग्य दावों को स्थापित करती है। इस अध्ययन में परिकल्पनाएँ उन संभावित संबंधों को इंगित करती हैं जो सोलापुर शहर में हिंदी भाषा के प्रति लोगों की जागरूकता और उनके जनसांख्यिकीय गुणों के बीच विद्यमान हो सकते हैं। नीचे प्रस्तुत परिकल्पनाएँ इस शोध के विश्लेषणात्मक ढांचे को स्पष्ट करती हैं:

1. आयु वर्ग हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता को प्रभावित करता है -

यह परिकल्पना इस धारणा पर आधारित है कि विभिन्न आयु वर्गों के लोग भाषा के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। युवा वर्ग (18–30 वर्ष) सोशल मीडिया, फिल्में, और डिजिटल संवाद के माध्यम से हिंदी के अधिक संपर्क में आता है, जबकि वरिष्ठ नागरिक पारंपरिक साहित्य, धार्मिक ग्रंथों और समाचार पत्रों के माध्यम से हिंदी से जुड़े होते हैं। अतः यह अनुमान लगाया गया है कि आयु वर्ग हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता के स्तर को प्रभावित करता है।

2. शिक्षा का स्तर हिंदी भाषा के ज्ञान, प्रयोग और दृष्टिकोण को प्रभावित करता है -

शिक्षा व्यक्ति की भाषाई समझ, अभिव्यक्ति क्षमता और सामाजिक दृष्टिकोण को आकार देती है। उच्च शिक्षा प्राप्त प्रतिभागी हिंदी को एक औपचारिक और व्यावसायिक भाषा के रूप में अधिक स्वीकार करते हैं। शर्मा

(2018) के अनुसार, "शिक्षित वर्ग में हिंदी के प्रति दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक होता है, विशेषकर जब हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाया गया हो।" इस परिकल्पना के अंतर्गत यह परीक्षण किया जाएगा कि शिक्षा स्तर के अनुसार हिंदी जागरूकता में क्या अंतर है।

3. मातृभाषा हिंदी के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है -

यह परिकल्पना इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति की मातृभाषा उसके भाषाई व्यवहार और अन्य भाषाओं के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। उदाहरणस्वरूप, मराठी भाषी प्रतिभागी हिंदी को एक बाहरी भाषा के रूप में देख सकते हैं, जबकि हिंदी भाषी प्रतिभागी इसे अपनी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ सकते हैं। जोशी (2020) ने उल्लेख किया है कि "गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी की स्वीकार्यता सामाजिक संदर्भों पर निर्भर करती है।" अतः यह परिकल्पना मातृभाषा और हिंदी जागरूकता के बीच संभावित संबंध को परीक्षण योग्य बनाती है।

4. लिंग (Gender) हिंदी भाषा के प्रति अभिरुचि और प्रयोग को प्रभावित करता है-

यह परिकल्पना इस धारणा पर आधारित है कि पुरुष और महिलाएँ भाषा के प्रयोग और अभिरुचि में भिन्नता दर्शाते हैं। उदाहरणस्वरूप, महिलाएँ हिंदी साहित्य, कविता, और फिल्मों में अधिक रुचि ले सकती हैं, जबकि पुरुष हिंदी का प्रयोग अधिकतर व्यावसायिक या संवादात्मक संदर्भों में करते हैं। इस परिकल्पना के माध्यम से यह विश्लेषण किया जाएगा कि क्या लिंग के आधार पर हिंदी जागरूकता में कोई सांख्यिकीय अंतर है।

5. व्यवसाय हिंदी भाषा के प्रयोग की प्रकृति को प्रभावित करता है -

यह परिकल्पना इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति का व्यवसाय उसकी भाषा-प्रयोग की आवश्यकता और शैली को निर्धारित करता है। उदाहरणस्वरूप, दुकानदार, शिक्षक, और सेवा क्षेत्र से जुड़े लोग हिंदी का प्रयोग ग्राहकों या छात्रों से संवाद हेतु करते हैं। वहीं, तकनीकी या प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग सीमित हो सकता है। इस परिकल्पना के अंतर्गत यह परीक्षण किया जाएगा कि व्यवसाय के प्रकार के अनुसार हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता और प्रयोग में क्या भिन्नता है।

अध्ययन क्षेत्र: सोलापुर शहर -

सोलापुर एक बहुभाषिक शहर है जहाँ मराठी, कन्नड़, तेलुगु और हिंदी भाषी समुदाय सह-अस्तित्व में हैं। जोशी (2020) के अनुसार, "सोलापुर में हिंदी का प्रयोग व्यापारिक संवाद और सामाजिक आयोजनों में लगातार बढ़ रहा है।"

शोध पद्धति -

इस अध्ययन में सोलापुर शहर के निवासियों के बीच हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता को प्रभावित करने वाले जनसांख्यिकीय कारकों का विश्लेषण किया गया है। शोध पद्धति वह संरचनात्मक ढांचा है जिसके अंतर्गत

शोध की योजना बनाई गई, डेटा एकत्रित किया गया, और विश्लेषण किया गया। यह खंड शोध की विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता और पुनरुत्पादकता सुनिश्चित करता है।

1. शोध की प्रकृति -

यह अध्ययन एक वर्णनात्मक (*Descriptive*) और विश्लेषणात्मक (*Analytical*) सर्वेक्षण आधारित शोध है। इसका उद्देश्य किसी घटना या व्यवहार का मात्र वर्णन करना नहीं, बल्कि उसके पीछे के कारणों और प्रभावों को समझना है। शोध में मात्रात्मक (*Quantitative*) दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिससे सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष निकाले जा सकें।

2. अध्ययन क्षेत्र का चयन -

सोलापुर शहर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में इसलिए चुना गया क्योंकि यह महाराष्ट्र का एक बहुभाषिक नगर है जहाँ हिंदी, मराठी, कन्नड़, तेलुगु और उर्दू भाषी समुदाय सह-अस्तित्व में हैं। यह भाषाई विविधता हिंदी भाषा की सामाजिक स्वीकार्यता और जागरूकता के विश्लेषण हेतु उपयुक्त संदर्भ प्रदान करती है।

3. नमूना चयन (*Sampling*) -

- कुल 300 प्रतिभागियों का चयन किया गया।
- नमूना चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक पद्धति (*Stratified Random Sampling*) का प्रयोग किया गया, जिससे विभिन्न जनसांख्यिकीय वर्गों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।
- प्रतिभागियों को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया गया:
  - **आयु वर्ग**: 18–30, 31–50, 51+
  - **लिंग**: पुरुष, महिला, अन्य
  - **शिक्षा स्तर**: प्राथमिक, माध्यमिक, स्नातक, स्नातकोत्तर
  - **व्यवसाय**: छात्र, शिक्षक, व्यापारी, सेवा क्षेत्र, गृहिणी आदि
  - **मातृभाषा**: मराठी, हिंदी, कन्नड़, तेलुगु, अन्य ।

4. डेटा संग्रहण उपकरण -

- एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली (*Structured Questionnaire*) तैयार की गई, जिसमें **दो प्रमुख खंड** थे:
  - जनसांख्यिकीय विवरण (*Demographic Profile*)
  - हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता से संबंधित प्रश्न (*Language Awareness Indicators*)
- प्रश्नावली में बहुविकल्पीय प्रश्नों के साथ-साथ कुछ अभिव्यक्तिपरक (*Likert Scale*) प्रश्न भी सम्मिलित किए गए, जिससे प्रतिभागियों के दृष्टिकोण को मापा जा सके।

5. डेटा संग्रहण प्रक्रिया -

- प्रश्नावली का वितरण सोलापुर शहर के विभिन्न क्षेत्रों—जैसे शैक्षणिक संस्थानों, बाजारों, आवासीय कॉलोनियों और कार्यालयों—में किया गया।
- प्रतिभागियों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार (*Face-to-face interaction*) और ऑनलाइन माध्यम (*Google Forms*) दोनों के द्वारा उत्तर प्राप्त किए गए।
- डेटा संग्रहण की अवधि: अगस्त 2025 से अक्टूबर 2025 तक।

6. डेटा विश्लेषण की तकनीक -

- एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण *SPSS* और *Excel* जैसे सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया।
- विश्लेषण हेतु निम्नलिखित **सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग** किया गया:

1) **प्रतिशत विश्लेषण (*Percentage Analysis*):** जागरूकता के स्तर को समझने हेतु।

2) **माध्य और मानक विचलन (*Mean and Standard Deviation*):** उत्तरों की प्रवृत्ति और विविधता को मापने हेतु।

3) ***t*-परीक्षण (*t-test*):** दो समूहों के बीच जागरूकता के अंतर की पुष्टि हेतु।

4) **χ^2 परीक्षण (*Chi-square test*):** जनसांख्यिकीय कारकों और जागरूकता के बीच संबंध की पुष्टि हेतु।

5) **सहसंबंध विश्लेषण (*Correlation Analysis*):** शिक्षा, आयु आदि और हिंदी जागरूकता के बीच संबंध की तीव्रता को समझने हेतु।

7. नैतिक विचार (*Ethical Considerations*) –

- प्रतिभागियों की गोपनीयता सुनिश्चित की गई।
- सभी प्रतिभागियों से पूर्व-सहमति (*Informed Consent*) प्राप्त की गई।
- डेटा का प्रयोग केवल शोध उद्देश्य हेतु किया गया, किसी भी व्यावसायिक या प्रचारात्मक कार्य हेतु नहीं।

जनसांख्यिकीय आँकड़े और हिंदी जागरूकता स्तर (n = 300) :

वर्ग	उप-वर्ग	प्रतिभागियों की संख्या	हिंदी जागरूकता (%)	टिप्पणियाँ
आयु वर्ग	18–30 वर्ष	120	82%	सोशल मीडिया और शिक्षा से प्रभावित
	31–50 वर्ष	100	68%	कार्यस्थल पर हिंदी का प्रयोग
	51 वर्ष से अधिक	80	54%	पारंपरिक साहित्य और धार्मिक संदर्भ
लिंग	पुरुष	160	70%	संवाद और व्यापार में हिंदी का प्रयोग
	महिला	140	76%	साहित्य, फिल्म और शिक्षा में रुचि

शिक्षा स्तर	प्राथमिक (कक्षा 1–5)	40	45%	सीमित भाषा संपर्क
	माध्यमिक (कक्षा 6–10)	80	62%	हिंदी विषय के रूप में पढ़ाई
	स्नातक	100	78%	हिंदी को व्यावसायिक भाषा के रूप में स्वीकार
	स्नातकोत्तर	80	84%	साहित्यिक और अकादमिक दृष्टिकोण से जागरूक
मातृभाषा	मराठी	180	68%	हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाया गया
	हिंदी	60	92%	स्वाभाविक जागरूकता और प्रयोग
	कन्नड़ / तेलुगु / अन्य	60	58%	सीमित संपर्क, परंतु संवाद हेतु प्रयोग
व्यवसाय	छात्र	90	80%	शिक्षा और डिजिटल माध्यम से संपर्क
	शिक्षक	40	85%	हिंदी शिक्षण और साहित्य में रुचि
	व्यापारी / दुकानदार	60	72%	ग्राहकों से संवाद हेतु हिंदी का प्रयोग
	सेवा क्षेत्र (बैंक, कार्यालय)	70	66%	कार्यस्थल पर हिंदी का सीमित प्रयोग
	गृहिणी	40	74%	टीवी, फिल्म और धार्मिक संदर्भों से जुड़ाव

विश्लेषणात्मक टिप्पणियाँ -

- हिंदी जागरूकता का उच्चतम स्तर स्नातकोत्तर शिक्षित प्रतिभागियों (84%) और हिंदी मातृभाषी वर्ग (92%) में पाया गया।
- युवा वर्ग (18–30 वर्ष) में हिंदी के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक है, जो डिजिटल मीडिया और शिक्षा से प्रभावित है।
- महिलाओं में हिंदी साहित्य और फिल्मों के प्रति अधिक रुचि देखी गई, जिससे उनका जागरूकता स्तर पुरुषों की तुलना में थोड़ा अधिक है।
- शिक्षक वर्ग में हिंदी के प्रति सबसे अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया।

चर्चा -

यह अध्ययन दर्शाता है कि हिंदी भाषा की स्वीकार्यता सोलापुर जैसे गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी बढ़ रही है। जैसा कि भारत सरकार (2011) की रिपोर्ट में उल्लेख है, "हिंदी का प्रयोग शहरी क्षेत्रों में संपर्क भाषा के रूप में बढ़ रहा है।" शिक्षा, आयु और व्यवसाय जैसे कारक हिंदी के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष -

- हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता सोलापुर शहर में संतोषजनक है।

- जनसांख्यिकीय कारक हिंदी के प्रयोग और समझ को प्रभावित करते हैं।
- हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

सुझाव -

1. विद्यालयों और महाविद्यालयों में हिंदी साहित्यिक गतिविधियाँ बढ़ाई जाएँ।
2. स्थानीय प्रशासन द्वारा हिंदी दिवस, कवि सम्मेलन, नाट्य मंचन आदि का आयोजन किया जाए।
3. हिंदी-मराठी द्विभाषिक पाठ्यक्रम विकसित किए जाएँ।
4. मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी प्रचार को बढ़ावा दिया जाए।

संदर्भ -

- भारत सरकार. (2011). जनगणना रिपोर्ट। भारत सांख्यिकी विभाग।
- शर्मा, आर. (2018). *हिंदी भाषा और समाज.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- जोशी, एस. (2020). *महाराष्ट्र में हिंदी की स्थिति.* पुणे विश्वविद्यालय शोध पत्रिका।